विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 25 : अंक 11 : नई दिल्ली : 07-13 जून 2019

अहिंसा यात्रा प्रणेता, शान्तिदूत, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण सानन्द सुखसातापूर्वक बेंगलुरु की ओर विहरण करते हुए बेंगलुरु के काफी निकट पधार गए हैं। गत सप्ताह तीन राज्यों का स्पर्श किया। पूज्यप्रवर ने तमिलनाडु की यात्रा के बाद और कर्णाटक में प्रवेश करने से पूर्व तीन दिन आंध्रप्रदेश राज्य में विहरण किया। राज्य परिवर्तन के साथ मौसम भी बदल गया है। तमिलनाडु में जहां भीषण गर्मी थी, वहीं कर्णाटक में मानसून दस्तक देता हुआ-सा दिखाई दे रहा है। पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में ३० जून को बेंगलुरु के भिक्षु धाम (भिक्षु भारती) में आचार्य महाप्रज्ञ जन्मशताब्दी वर्ष शुभारंभ समारोह का भव्य समायोजन होगा। वहां ३ जुलाई को दीक्षा समारोह भी आयोज्य है। जिसके लिए आचार्यप्रवर ने अब तक २० दीक्षाएं घोषित कर दी हैं। आचार्यप्रवर बेंगलुरु के विभिन्न उपनगरों में विहरण करते हुए १२ जुलाई को आचार्यश्री तुलसी-महाप्रज्ञ चेतना-सेवाकेन्द्र में मंगल चातुर्मासिक प्रवेश करेंगे। बेंगलुरुवासी पूज्यप्रवर के चतुर्मास-प्रवास की तैयारी में निष्ठा के साथ जुटे हुए हैं।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण कर्णाटक में

अणुव्रत विद्यालय में अणुव्रत अनुशास्ता

२७ मई। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः अग्रमचेररी से कलनीपाक्कम की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में पलिगुण्डा के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर को वंदन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। आज पूज्यप्रवर वेलूर पधारने के लिए राष्ट्रीय राजमार्ग से कुछ संकरे मार्ग पर पधारे। कुछ दिशा बदली तो इन दिनों प्रातःकालीन विहार के दौरान सम्मुखीन रहने वाला सूर्य विहार पथ से तिरछी दिशा में दिखाई देने लगा। मार्ग के दोनों ओर आम के बगीचों में फलों से युक्त सैंकड़ों-सैंकड़ों सघन वृक्ष दृष्टिगोचर हो रहे थे। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यप्रवर लगभग ११.० कि.मी. का विहार कर कलनीपाक्कम में स्थित अणुव्रत विद्यालय हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के चेयरमेन श्री मीठालाल सुराणा आदि ने पूज्यप्रवर का आस्थासिक्त स्वागत किया। अपने विद्यालय में अपने आराध्य के प्रवास का सौभाग्य प्राप्त कर सुराणा परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा था।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'एक सिद्धान्त है कि आत्मा का पुनर्जन्म होता है। जब तक आत्मा मोक्ष में नहीं चली जाती, तब तक जन्म-मरण का चक्र चलता रहता है। जैन दर्शन में आत्मवाद एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है। पुनर्जन्मवाद आत्मवाद का ही एक अंग है। नास्तिक विचारधारा पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करती, जबकि आस्तिक विचारधारा पुनर्जन्म में विश्वास करती है। आस्तिक विचारधारा और नास्तिक विचारधारा दोनों में से सही का निर्णय करना संभव न हो तो भी मेरा सुझाव है कि आदमी को आस्तिक विचारधारा को मानकर चलते हुए पापों से बचना चाहिए और अहिंसा, सत्य आदि के मार्ग पर चलना चाहिए। परलोक न हो तो भी अच्छा कार्य करने में नुकसान क्या है? यदि परलोक हो तो अच्छे कार्य का अच्छा फल मिल सकता है। मेरा ऐसा मानना है कि जो आदमी नास्तिक विचारधारा को स्वीकार कर पापों का आचरण करता है, वह मेरी दृष्टि में भूल करता है। आदमी

को अपने जीवन को आस्तिक विचारधारा के अनुरूप बनाने का प्रयास करना चाहिए।'

अणुव्रत विद्यालय में आगमन के संदर्भ में पूज्यप्रवर ने कहा--'इस विद्यालय का नाम अणुव्रत से जुड़ा हुआ है। इस विद्यालय के विद्यार्थियों में अणुव्रत का प्रभाव रहे, इसका प्रयास होता होगा और होना चाहिए। अणुव्रत गीत भी यहां गाया जाता होगा। पूज्यप्रवर ने अणुव्रत गीत का आंशिक संगान किया। अणुव्रत का अच्छा कार्य चले। विद्यार्थियों में ज्ञान के साथ सत्संस्कारों का भी विकास हो।'

बालिका सारा भंसाली ने पूज्यप्रवर के स्वागत में गीत को प्रस्तुति दी।

श्री मीठालाल सुराणा, श्री अशोक सुराणा, श्री लूणचंद सुराणा और अणुव्रत विद्यालय की प्रिंसिपल श्रीमती षण्मुखप्रिया ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपने-अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। मध्याह्न में वेलूर के प्रसिद्ध स्वर्ण मंदिर के पी.आर.ओ. श्री श्रीभास्कर ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर वेलूर पदार्पण के समय स्वर्ण मंदिर में पधारने की की भी प्रार्थना की।

तेरापंथ धर्मसंघ के अनुशासन और विनय परंपरा का जीवंत उदाहरण

परमाराध्य आचार्यप्रवर सायंकाल करीब ५.०५ बजे कलनीपाक्कम से मूलैगेट की ओर प्रस्थित हुए, किन्तु प्रवास स्थल से बाहर पधारते ही आचार्यप्रवर को अपने चरण थामने पड़े, क्योंकि बड़ी संख्या में हैदराबादवासी उस मार्ग को रोककर खड़े थे। 'कृपासिंधु कृपा कराओ, चौमासो पाछो बक्साओ।' इस घोष के माध्यम से वे लोग अपनी पुरजोर प्रार्थना पूज्यचरणों में निवेदित कर रहे थे। ज्ञातव्य है कि पूज्यप्रवर द्वारा हैदराबाद में मुनि अर्हतकुमारजी आदि ठाणा-३ का चतुर्मास घोषित था। उसके लिए वे संत वहां पहुंच भी चुके थे। पूज्यप्रवर ने कुछ दिन पूर्व उनका चतुर्मास बेंगलुरु के लिए फरमा दिया। तीनों संतों ने इस हेतु हैदराबाद से प्रस्थान भी कर दिया। हैदराबाद के लोग पूज्यप्रवर द्वारा की गई इस कार्यवाही को हैदराबादवासियों द्वारा हुई किसी भूल का दण्ड मान रहे थे। उनके इस चिंतन में याथार्थ्य भी था।

आज हैदराबाद के श्रद्धालु पूज्यप्रवर के सम्मुख अपनी प्रार्थना के साथ उपस्थित थे। उन्होंने अपराह्न में भी पूज्यप्रवर से अपनी भूल के लिए क्षमायाचना करते हुए चतुर्मास पुनः प्रदान करने की प्रार्थना की थी, किन्तु उनकी वह अर्ज स्वीकार नहीं हुई। इसलिए वे अवसर पाकर मार्ग रोककर खड़े हो गए। कोई पूज्यचरणों के समीप बैठकर झोली फैलाते हुए अपने गुरु से भक्ति भरी अरदास कर रहा था तो कोई अन्य कोई प्रायश्चित्त मांगकर विभिन्न दलीलों के साथ भी अपने आराध्य को रिझाने का प्रयत्न कर रहा था। उनकी आंखों से ढुलकते आंसुओं से यह स्पष्ट अनुमानित हो रहा था कि उन्हें अपनी गलती का अहसास भी है और अनुताप भी। वे जिस रूप में पूज्यप्रवर को रिझाने का प्रयास कर रहे थे, उसमें तेरापंथ धर्मसंघ की गौरवशाली विनय परंपरा का दर्शन हो रहा था तो संतों का चतुर्मास पुनः प्राप्त करने की बलवती भावना भी दृष्टिगोचर हो रही थी। पूज्यप्रवर के साथ प्रस्थित हुए मुख्यमुनिश्री आदि संतों ने हैदराबादवासियों से मार्ग छोड़ने का संकेत किया, लेकिन वे लोग अपनी विनयपूर्ण और हठयुक्त प्रार्थना करते रहे। आखिर उन्हें समझाया गया कि रात्रि में आप लोग आचार्यप्रवर की उपासना कर लेना, अभी विहार में विलंब न होने दें।'

हैदराबादवासियों को न चाहते हुए भी उस समय मार्ग छोड़ना पड़ा, परन्तु उनकी इस प्रार्थना से उनकी मुराद फलने का मार्ग प्रशस्त हो गया। उनकी प्रार्थना आचार्यप्रवर को भीतर ही भीतर रिझाने में कामयाब हो गई। विहार के मध्य चतुर्मास पुनः प्रदान करने हेतु पूज्यप्रवर का मानस बनने के संकेत मिलने लग गए, लेकिन हैदराबादवासी उन संकेतों से अनभिज्ञ थे। उनके मन में अब भी उहापोह की स्थिति थी। वे अपने आराध्य को रिझाने और चतुर्मास पुनः प्राप्त करने हेतु अत्यधिक लालायित थे।

पूज्यप्रवर करीब ३.८ कि.मी. का विहार कर मूलैगेट में स्थित वलाल ए.एस.ए. नर्सरी एण्ड प्राइमरी

स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के कोरस्पोंडेंट श्री षणमुगम ने आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। विद्यालय के मुख्य द्वार पर कलश, नारियल, ढोल आदि के माध्यम से विद्यालय परिवार द्वारा पूज्यप्रवर के चरणकमलों में प्रणति अर्पित की गई।

रात्रिकालीन अर्हत वन्दना के कुछ समय पश्चात् आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार पूज्यप्रवर के प्रवास हॉल में ही संक्षिप्त कार्यक्रम की आयोजना की गई। हैदराबादवासी भी उस कार्यक्रम में उपस्थित हो गए। आचार्यप्रवर ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा--'हमारे धर्मसंघ में संगठन की व्यवस्थाओं का सम्मान रहना चाहिए। जो विधान-व्यवस्थाएं निर्मित हैं, वे संघ के हित के लिए हैं। जान-अनजान में भूल हो जाए तो उसे स्वीकार कर उसका यथौचित्य यथासंभव परिष्कार करने का प्रयत्न करना चाहिए और आगे से भूल न हो, ऐसा प्रयास रखना चाहिए। आज दिन में भी आप लोगों ने अपनी भावना व्यक्त की थी। यह तो आपकी श्रावकोचित अच्छी भावना है कि हमारा चतुर्मास क्यों जाए। खैर, जो हुआ, वह हो गया। उस अध्याय को एक सीमा तक खत्म मानते हैं।'

तदुपरान्त आचार्यप्रवर ने हैदराबादवासियों की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए कहा--

२७.५.२०१९

अर्हम्

पुनः संशोधित निर्देश--

मुनि अर्हतकुमारजी वि.सं. २०७६ का चतुर्मास हैदराबाद में करे। व्यवस्था समिति हैदराबाद के तत्त्वावधान में श्री प्रकाशजी बरड़िया के नेतृत्व में संतों के धार्मिक-आध्यात्मिक कार्यक्रम व गतिविधियां चलें, यह अपेक्षित है।

तमिलनाडु **आचार्य महाश्रमण**

आचार्यप्रवर के मुखारविंद से यह घोषणा सुनकर हैदराबादवासी खुशी से झूम उठे। 'जय-जय ज्योतिचरण, जय-जय महाश्रमण' के बुलंद घोष से पूज्यप्रवर का प्रवास हॉल ही नहीं, प्रवास परिसर गुंजायमान हो उठा। हैदराबादवासियों ने पूज्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए भविष्य में धर्मसंघ की मर्यादाओं, रीति-नीति के प्रति सजग व समर्पित रहने का संकल्प व्यक्त किया। यह सारा दृश्य 'तेरापंथ का इतिहास' में वर्णित पूर्वाचार्यों द्वारा यदा-कदा की गई अनुशासनात्मक कार्यवाही और श्रावक समाज द्वारा विनयपूर्वक पुनः गुरुकृपा प्राप्त करने की घटनाओं को स्मृति पटल पर लाने के साथ-साथ तेरापंथ धर्मसंघ की जीवंत विनय परंपरा, समर्पण और आचार्यश्री महाश्रमण की मृदुता-दृढ़तापूर्ण अनुशासन शैली व भक्तवत्सलता के साक्षात दर्शन करवा रहा था।

मन बने सुमन

२८ मई। परम पूज्य आचार्यप्रवर मूलैगेट से पेनातुर की ओर प्रस्थित हुए। मूलैगेट के ग्रामीण बड़ी संख्या में आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। मार्ग के दोनों ओर कुछ दूरी पर दिखाई दे रही पर्वतमाला मार्ग को प्राकृतिक रमणीयता प्रदान किए हुए थी। करीब ११.७ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर पेनातुर में स्थित गवर्नमेंट हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में समनस्क प्राणी भी हैं, अमनस्क प्राणी भी हैं। एकेन्द्रिय से लेकर चतुरिन्द्रिय तक के प्राणियों के मन नहीं होता। पंचेन्द्रिय प्राणियों में कुछ समनस्क होते हैं तो कुछ अमनस्क भी होते हैं। समनस्क का पर्यायवाची शब्द

है संज्ञी और अमनस्क का पर्यायवाची शब्द है असंज्ञी। मन का होना विकास की एक स्थिति है। मन होने से आदमी चिंतन, निर्णय, स्मृति और कल्पना कर सकता है। जिसके मन होता है, वही व्यक्ति धर्म की विशेष साधना कर सकता है। जिसके मन नहीं होता, वह न तो धर्म की विशेष साधना कर सकता है और न ही ज्यादा पाप कर सकता है।

आदमी का मन सुमन रहे, दुर्मन न बने। मन से अच्छा चिंतन आदि भी किया जा सकता है और उससे खराब चिंतन भी किया जा सकता है। राग-द्वेष मुक्त मन सुमन बन जाता है। आदमी का मन शुभ बना रहे, वह हिंसा आदि के विचारों में प्रवृत्त होकर अशुभ न बने। मन शुभ रहता है तो आत्मा कितने-कितने पापों से बच सकती है। मन को किसी अच्छे कार्य में नियोजित कर दिया जाए तो वह बुरे विचारों से बच सकता है।'

तूफान, मेघगर्जना और वर्षा के बीच गतिमान महासूर्य

परमाराध्य आचार्यप्रवर का सायंकालीन विहार करीब ४.४४ बजे होना निर्धारित था। करीब साढे चार बजे तक मौसम प्रायः सामान्य था। दूर-दूर हल्के बादल दिखाई दे रहे थे, लेकिन मौसम ने यकायक करवट ली। तेज हवा बहने लगी और उसके वेग के कारण आसमान बादलों से आच्छादित बन गया। पूज्यप्रवर द्वारा पेनातुर से कनीयम्बाड़ी की ओर प्रस्थान करते ही हवा ने तूफान या अंधड़ का रूप धारण कर लिया। मैदान की मिट्टी वातावरण में छा गई। पेड़ों के हजारों पत्ते और छोटी-छोटी टहनियां भी टूट कर गिरने लगीं। देखते ही देखते विहार मार्ग पर हजारों-हजारों इमिलियां भी गिर गईं। तेज हवा और उसके कारण वृक्षों की परस्पर टकराती डालियों व उखड़ते टीन के पतरों की आवाज, बादलों की गर्जना, कड़कती बिजलियां, वातावरण में छाया मिट्टी का गुबार और उसमें समाई हुई विभिन्न वस्तुएं वातावरण को भयावह बना रही थीं, किन्तु आचार्यप्रवर के नेतृत्व में अहिंसा यात्रा का कारवां बेखौफ आगे बढ़ रहा था। कुछ ही देर में वर्षा प्रारम्भ हो गई। वर्षा के कारण वातावरण थोड़े ही समय में स्वच्छ बन गया, किन्तु हवा के कारण तीव्र गतिमत्तायुक्त और शीतल बना हुआ वर्षा का पानी वेग के साथ शरीर से टकरा रहा था। पूज्यप्रवर के आसपास चल रहे संत और लोग वर्षा के जल से तरबतर बन गए। प्रातःकाल पसीने से नहलाने वाली प्रकृति पानी से नहलाकर मानों गर्मी से आहत जनता को राहत दे रही थी।

वर्षा काफी देर तक जारी रही, फिर वह क्रमशः मंद होती गई। कुछ समय के लिए वह रुक भी गई, किन्तु उसके रुकने का कालमान अधिक नहीं रहा। थोड़े समय पश्चात् वह पुनः प्रारम्भ हो गई, किन्तु इस बार वह हल्की बूंदाबांदी के रूप में ही थी। आज चेन्नई के श्रद्धालु सैंकड़ों की संख्या में पूज्यसन्निधि में उपस्थित थे। अन्य क्षेत्रों के श्रद्धालुओं की भी उपस्थिति अच्छी संख्या में थी। लोग प्राकृतिक कठिनाइयों के बीच भी निरंतर यात्रायित आचार्यप्रवर के प्रति श्रद्धाप्रणत थे। आचार्यप्रवर लगभग ६.० कि.मी. का विहार कर कनीयम्बाड़ी में स्थित गणाधिपति तुलसी जैन इंजीनियरिंग कॉलेज में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। गणाधिपति गुरुदेव तुलसी के नाम से जुड़े इस कॉलेज के अधिकारी और ट्रस्टीगण आचार्यप्रवर का स्वागत कर अतिशय हर्षविभोर थे।

आज रात्रि में पूज्यसन्निधि में गणाधिपति तुलसी जैन इंजीनियरिंग कॉलेज में पदार्पण के संदर्भ में कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में कॉलेज से संबंधित लोग व चेन्नईवासी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। कॉलेज ट्रस्ट के चीफ ट्रस्टी श्री सुगालचंद सिंघवी, चेयरमेन श्री प्यारेलाल पितलिया, सेक्रेट्री श्री अमरचंद लुंकड़ आदि ने पूज्यप्रवर के समक्ष कॉलेज से संबंधित अवगति प्रस्तुत करते हुए कहा--'सन् २००० में स्थापित तथा लगभग ३७ एकड़ में विस्तीर्ण इस कॉलेज के छात्रावास में किसी समय करीब तीन सौ छात्र रहते थे। वर्तमान

में यह संख्या करीब ७० है। गुरुदेव तुलसी के नाम से जुड़े इस कॉलेज के ट्रस्ट में तेरापंथ समाज के ही नहीं, स्थानकवासी समाज के लोग भी प्रमुखता से जुड़े हुए हैं। इसका प्रारम्भिक दौर काफी कठिनाइयों भरा भी रहा, लेकिन अब इसकी स्थिति काफी अच्छी बन रही है। वर्तमान में यहां ८७६ छात्र अध्ययन करते हैं। यहां अब गणाधिपति तुलसी जैन आर्ट एण्ड साइंस कॉलेज भी प्रारम्भ करना प्रस्तावित है।'

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा--'आज हम इस कॉलेज में आए हैं। इस कॉलेज का नाम हम सुनते थे कि गुरुदेव तुलसी के नाम से कॉलेज है, किन्तु इधर आने का प्रोग्राम तमिलनाडु में आने के बाद भी नहीं बना। कुछ दिनों पूर्व मानस बना कि वेलूर तो जाना चाहिए। फिर सुना कि कॉलेज के लिए और चक्कर लेना पड़ेगा। मैंने कहा चक्कर है तो भी कॉलेज में जाना है। इस कॉलेज में आकर अच्छा लग रहा है, क्योंकि यह हमारे गुरुदेव के नाम से जुड़ा हुआ विद्या संस्थान है।

दुनिया में विद्या संस्थान तो बहुत हैं। जगह-जगह विद्या संस्थानों की इमारते खड़ी हैं। उनमें कितने-कितने विद्यार्थी पढ़ते हैं और कितने-कितने प्राध्यापक पढ़ाते भी हैं। लौकिक शिक्षा का अपना महत्त्व है और वह सांसारिक दृष्टि से जरूरी भी होती है, लेकिन उसके साथ-साथ अच्छे व्यक्तित्व के निर्माण का प्रयास भी होना चाहिए। ऐसा व्यक्तित्व जिसमें ज्ञान सम्पन्नता भी हो, साथ में संस्कार सम्पन्नता भी हो। ज्ञान और सत्संस्कार दोनों विद्या संस्थान के साथ जुड़े रहते हैं तो एक अच्छी पीढ़ी का निर्माण हो सकता है। विद्यार्थी अच्छे शिक्षित और संस्कारी होते हैं तो वे परिवार, समाज व राष्ट्र के लिए अच्छे उपयोगी बन सकते हैं, समस्या नहीं, समाधान बन सकते हैं। यहां पढ़ने वाले विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का भी विकास होता रहे।'

पसीने की अनगिन बूंदों से प्रेरक इतिहास सृजित कर वेलूर पधारे आचार्यप्रवर

२६ मई। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर प्रातः कनीयम्बाड़ी से वेलूर की ओर प्रस्थित हुए। गणाधिपति तुलसी जैन इंजीनियरिंग कॉलेज से संबंधित लोगों की प्रार्थना पर आचार्यप्रवर कॉलेज की ऑफिस में भी पधारे और मंगलपाठ सुनाया। कॉलेज की प्रिंसिपल डॉ. डी. भारती ने भी पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। कॉलेज ट्रस्ट से जुड़े लोगों ने आचार्यप्रवर के सम्मुख कॉलेज की विभिन्न इमारतों आदि के विषय में जानकारी प्रस्तुत की। कॉलेज ट्रस्ट के चीफ ट्रस्टी श्री सुगालचंद सिंघवी ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया--'मैं आचार्य तुलसी से बहुत प्रभावित था। इसलिए इस कॉलेज का नाम उनके नाम से रखा।'

कनीयम्बाड़ी के ग्रामीणों को विहार के दौरान आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। इसी प्रकार वेलूर के अनेकों मोटर शोरूम्स से संबंधित लोग पूज्यप्रवर के दर्शन और आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। विहार पथ के आसपास स्थित अनेक श्रद्धालु परिवारों के घरों/व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के आसपास उनसे संबंधित लोगों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो आचार्यप्रवर ने अपने चरण थाम कर उन्हें मंगल आशीष प्रदान करते हुए मंगलपाठ सुनाया।

आचार्यप्रवर के स्वागत में वेलूरवासियों ने पलक-पांवड़े बिछा दिए। चारों ओर हर्षोल्लास का वातावरण था। ऐसा हो भी क्यों नहीं, वेलूरवासियों को आचार्यप्रवर के स्वागत का सौभाग्य बहुत कोशिशों के बाद ही नहीं, आशा और प्रार्थना को पूरी तरह छोड़ने के बाद जो मिला था। आचार्यप्रवर ने वेलूर पधारने के लिए अपने दस दिनों के पूर्व निर्धारित यात्रा पथ में करीब सत्तर कि.मी. की अतिरिक्त यात्रा को जोड़ना स्वीकार किया तो व्यक्ति-व्यक्ति के मन में इस प्रकार के सवाल उठने लगे--इस भीषण गर्मी में इतनी लम्बी यात्रा कैसे संभव होगी?, क्या ३१ मई को गुड़ियात्तम पधारने का कार्यक्रम यथावत रह सकेगा? तमिलनाडु का सबसे गर्म क्षेत्र है वेलूर, आचार्यप्रवर वहां इस भयंकर गर्मी में क्यों पधार रहे हैं? लेकिन आचार्यप्रवर ने प्रचंड गर्मी

के इस मौसम में आज वेलूर का स्पर्श कर अपने ही एक कथन को सिद्ध कर दिया कि 'सपने नहीं, संकल्प पूरे होते हैं।'

पूज्यप्रवर ने न केवल वेलूरवासियों के सपने को अपने संकल्प का रूप दिया, अपितु चिलचिलाती धूप में लम्बे विहार कर उसे साकार भी कर दिखाया। जिन गर्मी के दिनों में लोग एयरकंडिशन से कुछ घंटे भी दूर रहना नहीं चाहते, उन्हीं दिनों में आचार्यप्रवर ने प्रत्येक दिन कई घंटे तीखी सूर्यकिरणों का सामना करते हुए बिताए। आचार्यप्रवर ने इसके लिए नौ दिन (गुड़ियात्तम पहुंचने तक) एक दिन में दो-दो विहार किए तथा सात दिन सत्रह से अधिक कि.मी. के विहार स्वीकार किए। इसके पीछे निहित थी आचार्यप्रवर की भक्तवत्सलता और करुणा। पूज्यतन से निःसृत पसीने की अनगिन बूंदों ने एक ऐसा इतिहास लिख दिया, जो आने वाली पीढ़ियों को भी तेरापंथ के प्रासाद की सुदृढ़ता का रहस्य समझाता रहेगा।

आचार्यप्रवर के पदार्पण से तेरापंथ समाज के लोगों का आंतरिक श्रद्धाभाव और उल्लास भाव तो प्रखरता के साथ मुखर होना स्वाभाविक था ही, किन्तु अन्य जैन समाज के लोग भी बड़ी संख्या में आचार्यप्रवर के स्वागत में सोत्साह उपस्थित थे। मूर्तिपूजक समाज की महिलाओं ने अपनी परंपरानुसार पूज्यप्रवर का स्वागत किया। आचार्यप्रवर लगभग १२.० कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर वेलूर के श्री वेंकटेश्वर हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

विद्यालय के मुख्य द्वार पर तिरुवन्नामलै के नवनिर्वाचित सांसद श्री अन्नादुरै ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारे जीवन में समय का बहुत महत्त्व होता है। द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव--ये चार दृष्टियां हैं। इनमें एक है--काल। काल के बिना कोई कार्य नहीं हो सकता। वर्षा का पानी तो समान रूप से बरसता है, उसका उपयोग क्या किया जाता है, यह ध्यातव्य है। उस पानी को कुण्ड में एकत्रित कर पीने के काम में भी लिया जा सकता है तो वह पानी नाली में भी बह सकता है। इसी प्रकार समय तो सबको समान रूप से मिलता है, कौन व्यक्ति उसका क्या उपयोग करता है, यह विचारणीय है।

तीन शब्द हैं--सदुपयोग, दुरुपयोग और अनुपयोग। आदमी समय का दुरुपयोग तो करे ही नहीं, अनुपयोग भी क्यों करे। उसे समय का यथासंभव आध्यात्मिक सदुपयोग करने का प्रयत्न करना चाहिए। आध्यात्मिक सेवा, स्वाध्याय, ध्यान, जप आदि के माध्यम से समय का सदुपयोग किया जा सकता है। जीवनकाल कितना--उससे अधिक महत्त्वपूर्ण है प्राप्त जीवन का उपयोग क्या करना। आदमी को अपना समय ज्ञान के विकास और सदाचरण की पुष्टि में नियोजित करना चाहिए।'

पूज्यप्रवर ने वेलूर आगमन का उल्लेख करते हुए वेलूरवासियों को अहिंसा यात्रा की संकल्पत्रयी ग्रहण करवाई।

प्रतिष्ठित वी.आई.टी. युनिवर्सिटि के चांसलर श्री जी. विश्वनाथन ने कहा--'आज से पचास साल पूर्व आचार्य तुलसी यहां पधारे थे और आज आधी सदी बाद आचार्यश्री महाश्रमणजी का पदार्पण हुआ है। आचार्यश्री अहिंसा यात्रा के माध्यम से जो संदेश प्रसारित कर रहे हैं, वे ही संदेश तिरुवल्लुवरजी ने अपनी पुस्तक तिरुकुरल में लिखे हैं। मैं वेलूरवासियों की ओर से आचार्यश्री का हार्दिक अभिनन्दन करता हूं।'

स्थानीय लायंस क्लब के गवर्नर श्री वेंकट शुभू ने कहा--'एक त्यागी गुरु, जो सदैव दूसरों का कल्याण करते, जिन्हें लोग आचार्यश्री महाश्रमणजी के रूप में जानते हैं, जो जीवन में त्याग के असली महत्त्व को दर्शाते हैं, आज हमारे शहर में आए हैं। मैं यह विश्वास दिलाता हूं कि गुरुजी द्वारा बताई गई बातों का पूर्णतया पालन करने का प्रयास करूंगा।'

आर.टी.ओ. श्री रामकृष्णन ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी के रूप में आज महान गुरु का आगमन हुआ है। आपको हमारे विद्यालय में देखकर ऐसा लग रहा है, जैसे हम सभी के सोए भाग्य जागृत हो गए। मैं आज अति प्रसन्न हूं कि आप हमारे इस विद्यालय परिसर में आए। मैं आपका हार्दिक स्वागत करता हूं।'

तेरापंथ महिला मंडल-वेलूर ने स्वागत गीत का संगान किया। तेरापंथ कन्या मंडल की कन्याओं ने गीत के द्वारा पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित की। मूर्तिपूजक समाज की ओर से सुलसा मंडल की बहनों ने पूज्यप्रवर के स्वागत में गीत को प्रस्तुति दी। संगीत मंडल की महिलाओं ने गीत के द्वारा पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना की।

स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री मीठालाल सुराणा, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती पूजा भण्डारी, श्री दानमल सुराणा और स्थानवासी समाज की ओर से श्री धर्मीचंद चोरड़िया ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी।

वेलूरवासियों ने पूज्यचरणों में संकल्प का उपहार समर्पित किया। वेलूर के विधायक श्री पी. कार्तिकेयन ने कार्यक्रम के दौरान पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीष प्राप्त की। तमिलनाडु होटल एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री वेंकट सुब्बू ने आज पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। वेलूर में करीब १४ तेरापंथी परिवार निवासित हैं। उन्हें आज पूज्यप्रवर की उपासना का दुर्लभ अवसर प्राप्त हो गया।

पाप को छोड़ो और कल्याण को स्वीकार करो

३० मई। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः वेलूर से विरिन्चीपुरम की ओर प्रस्थान किया। विहार के प्रारम्भ में वेलूर अग्निशमन विभाग के अधिकारी तथा अन्य स्टाफ ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान करते हुए मंगलपाठ सुनाया। आज का विहार प्रलम्ब था। विहार के दौरान काफी दूर तक आकाश बादलों से आच्छादित रहा। उसके बाद सूर्य जब उन्हें चीरकर आतप बरसाने लगा तो मंद-मंद हवा ने उसकी तीव्रता को नियंत्रित बनाए रखा। पूज्यचरण ज्यों-ज्यों गुड़ियात्तम की सीमा के निकट बढ़ते जा रहे थे, वहां के श्रद्धालुओं का आह्लाद बढ़ता हुआ-सा प्रतीत हो रहा था। करीब १३.३ कि.मी. का विहार कर विरिन्चीपुरम में स्थित श्री वर्धमान जैन मैट्रिकुलेशन हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज सायं तक प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी सुनकर कल्याण को भी जानता है और सुनकर पाप को भी जानता है। उसके बाद जो श्रेय हो, उसका समाचरण करना चाहिए। धर्म का श्रवण दुर्लभ होता है। आदमी कभी-कभी चाहते हुए भी धर्म की बात नहीं सुन पाता है और किसी-किसी में धर्म श्रवण की रुचि ही नहीं होती। आज के युग में सुनकर और पढ़कर दोनों प्रकारों से कल्याण और पाप को जाना जा सकता है। ज्ञान किसी माध्यम से हो, किन्तु ज्ञान होने के बाद कल्याण को स्वीकार करने और पाप को छोड़ने का प्रयास करना चाहिए।'

विद्यालय के प्रिंसिपल श्री पुगलेन्दी ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम में उपस्थित विद्यालय की शिक्षिकाओं एवं अन्य संबंधित लोगों को पूज्यप्रवर ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण करवाए।

आज के सांयकालीन गंतव्य स्थल की दूरी करीब ८.४ कि.मी. की थी, इसलिए आचार्यप्रवर ने उसके लिए अपराह्न में लगभग चार बजे प्रस्थान करने का निर्णय किया। गर्मी की प्रचंडता को देखते हुए यह स्पष्ट संभावना थी कि उस समय कड़ी धूप रहेगी और सूर्य सामने की ओर रहेगा, लेकिन विहार के निर्धारित समय से कुछ समय पूर्व ही मौसम सहसा बदल गया। कुछ समय पूर्व आतप बरसाने वाली प्रकृति जल बरसाने लग

गई। इस बारिश के कारण वातावरण में शीतलता तो व्याप्त हो गई, किन्तु अब विहार में विलम्ब होने की संभावना बन गई, लेकिन आचार्यप्रवर का अतिशय कहें या और कुछ, चार बजने से पहले-पहले वर्षा थम गई। आचार्यप्रवर निर्धारित समयानुसार विरिन्चीपुरम से के.वी. कुप्पम की ओर प्रस्थित हुए।

विरन्चीपुरम ग्राम के बीच से आचार्यप्रवर का पधारना हुआ तो वहां के निवासियों में विशेष भक्तिभाव देखने को मिला। गांव के अधिकांश लोगों में अहिंसा यात्रा के प्रति आकर्षण और उत्सुकता तथा आचार्यप्रवर के दर्शन की ललक स्पष्ट दिखाई दे रही थी। कोई पूज्यप्रवर के दर्शन हेतु सपरिवार सड़क पर पहुंच रहा था तो कोई अपने-अपने घर आदि के बाहर खड़ा होकर पूज्यप्रवर को करबद्ध सादर वंदन कर रहा था। कोई-कोई तो आचार्यप्रवर के चरणों में साष्टांग प्रणाम अर्पित कर रहा था। आचार्यप्रवर दर्शनार्थियों पर आशीषवृष्टि करते हुए अपने गंतव्य की ओर गतिमान थे। श्री रमन नामक एक व्यक्ति ने पूज्यप्रवर से चाय-कॉफी की मनुहार की तो आचार्यप्रवर ने उसे भी मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। मार्ग में भारत नर्सरी एण्ड प्राइमरी स्कूल की शिक्षिकाएं भी पूज्यप्रवर के दर्शन व पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुईं। यत्र-तत्र दृष्टिगोचर हो रहे मुस्लिम लोग तथा बुर्काधारी महिलाएं भी अहिंसा यात्रा को कुतूहल के साथ निहार रहे थे। इंसानियत का पैगाम लेकर चल रहे आचार्यप्रवर को रमजान माह में 'रोजा' रख रहे कुछ मुस्लिम बंधुओं ने भी अपनी परंपरानुसार आदाब किया। मार्ग में कासराजपुरम व वेलेचेरी के ग्रामीणों ने भी पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद ग्रहण किया। वेलेचेरी ग्राम की महिलाओं ने भी आचार्यप्रवर को साष्टांग वंदन किया तो पूज्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीष प्रदान की।

आचार्यप्रवर का के.वी. कुप्पम में पदार्पण स्थानीय श्रद्धालु परिवारों के उल्लास को चरम पर स्थापित किए हुए था। बुलंद जयघोष लोगों के उल्लास की अभिव्यक्ति के साधन बने हुए थे। गुड़ियात्तमवासी व उनके संबंधीजन भी इस अवसर पर बड़ी संख्या में उपस्थित थे। स्थानीय जैनेतर लोगों में भी आचार्यप्रवर के प्रति आकर्षण का भाव अनायास देखने को मिल रहा था। लोग पूज्यप्रवर को भावपूर्ण वंदन कर पावन आशीष प्राप्त कर रहे थे। जनता की भीड़ और उत्साह को देखकर यह कहना कठिन था कि के.वी. कुप्पम में मात्र तीन ही तेरापंथी परिवार हैं। आचार्यप्रवर लगभग ८.५ कि.मी. का विहार कर के.वी. कुप्पम में स्थित गवर्नमेंट हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

गुड़ियात्तम में भव्य स्वागत

३१ मई। परम पूज्य आचार्यप्रवर के गुड़ियात्तम पदार्पण के संदर्भ में बड़ी संख्या में गुड़ियात्तमवासी आज सूर्योदय से पूर्व ही के.वी. कुप्पम में पहुंच गए। लगभग पांच दशकों बाद अपने आराध्य के आगमन की आहट उन्हें रोमांचित और हर्षाभिभूत बनाए हुए थी। पूज्यप्रवर सूर्योदय के कुछ समय पश्चात् के.वी. कुप्पम से गुड़ियात्तम की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में के.वी. कुप्पम के श्रद्धालुओं को अपने-अपने घरों के निकट पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सुअवसर मिला। पूज्यप्रवर के.वी. कुप्पम में निर्मित तेरापंथी भवन में भी पधारे और संबंधित श्रद्धालुजनों को मंगलपाठ सुनाया। के.वी. कुप्पम में जैनेतर समाज के लोगों ने भी पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। गुड़ियात्तमवासियों के अन्य शहरों में रहने वाले संबंधीजन ही नहीं, अपितु तमिलनाडु के विभिन्न क्षेत्रों के लोग भी सैंकड़ों की संख्या में पूज्य सन्निधि में पहुंच रहे थे। मार्गवर्ती पी.के.पुरम और किलातुर के ग्राम्यजनों ने पूज्यप्रवर को सादर नमन किया तो आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। किलातुर के ग्रामीण आचार्यप्रवर की मंगल प्रेरणा से भी लाभान्वित हुए। किलातुर में स्थित प्राचीन शिव मंदिर के पुजारी आदि ने पूज्यप्रवर से मंदिर में पधारने की प्रार्थना की। आचार्यप्रवर ने सड़क मार्ग से ही मंगलपाठ उच्चरित किया। मार्ग में श्री अभिरामी आर्टस् एण्ड

साइंस कॉलेज फॉर वुमेन के समीप उससे संबद्ध ट्रस्ट के करीब तीस ट्रस्टी आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ खड़े थे। आचार्यप्रवर ने कुछ क्षण के लिए उनके निकट अपने चरण थामे और उन्हें मंगलपाठ सुनाया। इसी प्रकार नारायणी महल के ऑनर श्री विनोद ने सपरिवार पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीष ग्रहण की।

पूज्यप्रवर के स्वागत में गुड़ियात्तमवासियों ने पलक-पांवड़े बिछा दिए। आज उनकी खुशी का कोई पार नहीं था। उनकी प्रसन्न भावभंगिमा उनके आंतरिक उल्लास को बयां कर रही थी। न केवल तेरापंथ समाज, अपितु बड़ी संख्या में उपस्थित अन्य जैन एवं जैनेतर समाज का उत्साह भी स्वागत जुलूस को भव्यता प्रदान किए हुए था। अपरिचित व्यक्ति भी आचार्यप्रवर की मनहारी छवि की झलक पाने के लिए आतुर दिखाई दे रहे थे। भीड़ के बीच जब कोई अनजान व्यक्ति आचार्यप्रवर के दर्शन में सफलता पा रहा था तो वह अपने साथी को संकेत के द्वारा आचार्यप्रवर के दर्शन करवा रहा था। लोग करबद्ध और नतसिर होकर आचार्यप्रवर को वंदन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त कर रहे थे।

सरस्वती विद्यालय के बालक-बालिकाएं 'घोष' (स्कूली बैण्ड) के माध्यम से पूज्यचरणों में अपनी विनयांजलि अर्पित कर रहे थे। गंगै अम्मन मंदिर की ओर से आचार्यप्रवर के स्वागत में छत्र, कलश, नारियल, फूल आदि प्रस्तुत किए गए। मंदिर ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री आर.जी.एस. कार्तिक आदि लोगों ने मंदिर ट्रस्ट की ओर से पूज्यप्रवर का भावभीना अभिनंदन किया। गुड़ियात्तम नगरपालिका की ओर से भी आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया गया। पूज्यप्रवर करीब १० कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर गुड़ियात्तम के सेतुवन्दै में स्थित सरस्वती विद्यालय मैट्रिकुलेशन हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ।

तमिलनाडु स्तरीय मंगलभावना समारोह

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी के पास वचन की शक्ति होती है। भाषा के द्वारा विचारों का आदान-प्रदान किया जाता है और उसके द्वारा दूसरों को प्रशिक्षित भी किया जा सकता है। दुनिया में कितनी-कितनी भाषाएं हैं, यदि पूरे विश्व की एक ही भाषा होती तो कितनी सुविधा हो जाती। आदमी वचन शक्ति का उपयोग कैसे करता है, यह ध्यातव्य है। आदमी को मितभाषी रहना चाहिए। उसे ज्यादा नहीं बोलना चाहिए। बात को अनावश्यक लम्बाना और निस्सार बोलना वाणी के विष हैं। परिमित और सारपूर्ण बोलना वाक्पटुता के लक्षण हैं।

व्यक्ति को कटु नहीं बोलना चाहिए, मधुरभाषी रहना चाहिए। मधुरभाषी होने के साथ-साथ आदमी को सत्यभाषी भी होना चाहिए। प्रिय बोलने के लिए भी अयथार्थ नहीं बोलना चाहिए। यथार्थता प्रथम बात है और प्रियता दूसरी। इस प्रकार भाषा के कुछ सूत्र जीवनगत हो जाएं तो भाषा अच्छी बन सकती है।'

तमिलनाडु स्तरीय मंगल भावना समारोह के संदर्भ में आचार्यप्रवर ने कहा--'तमिलनाडु में हमारा काफी भ्रमण हुआ है। अब तमिलनाडु से विदाई लेने का समय निकट आ रहा है। तमिलनाडु में चतुर्मास, मर्यादा महोत्सव, अक्षय तृतीया, अनेक दीक्षा समारोह, महावीर जयंती, पट्टोत्सव, जन्मोत्सव, दीक्षा दिवस आदि अनेक कार्यक्रम समायोजित हो गए। अब आप लोग हमें मंगल भावना देने की तैयारी में हैं। हम जहां जाएं, आपकी मंगल भावनाएं हमारे साथ रहें। चेन्नई में चतुर्मास और कोयम्बत्तूर में मर्यादा महोत्सव हो गया। काफी व्यवस्थित कार्यक्रम हुए। तमिलनाडु की यात्रा के दौरान हम धरती के किनारे तक जाकर आ गए। तमिलनाडु में धर्म की खूब प्रभावना होती रहे। श्रावक-श्राविकाएं खूब अच्छा कार्य करते रहें, मंगलकामना।'

पूज्यप्रवर की प्रेरणा से गुडियात्तम के सैंकड़ों लोगों ने आचार्यप्रवर से अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण किए।

स्थानीय तेरापंथी सभा के मंत्री श्री मानमल नाहर, तेरापंथ युवक परिषद की ओर से श्री दीपक आच्छा, प्रवास व्यवस्था समिति के मंत्री श्री जसवंत गिड़िया, श्री सज्जनलाल नाहर, स्थानकवासी समाज की ओर से श्री जवेरीलाल दुगड़, सरस्वती विद्यालय के प्रिंसिपल श्री कोदण्ड रामन और बालक भूमिक गिड़िया ने पूज्यप्रवर के स्वागत में आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी।

तेरापंथी महिला मण्डल-गुड़ियात्तम ने स्वागत गीत का संगान किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति के द्वारा पूज्यचरणों में अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। तेरापंथ कन्या मण्डल की कन्याओं ने आचार्यप्रवर के अभिनन्दन में अपनी प्रस्तुति दी। गुड़ियात्तम की बेटियों ने गीत के द्वारा आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना की। गुड़ियात्तम ज्ञानशाला के पूर्व ज्ञानार्थियों ने आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना में अपनी प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम में गुड़ियात्तम के विधायक कात्तवरायण, अम्बुर के विधायक विल्वनादन, ए.डी.एम.के. पार्टी के टाउन सेक्रेट्री श्री जे.के.एन. चलनी, डी.एम.के. पार्टी के टाउन सेक्रेट्री श्री सौंदरराजन, गुड़ियात्तम रोटरी क्लब के प्रेसिडेंट श्री अनवरस, गुड़ियात्तम गलेक्सी रोटरी क्लब के प्रेसिडेंट श्री गोपीनाथन, वरिष्ठ अधिवक्ता श्री भूपति भी उपस्थित थे। पूज्यप्रवर ने उन्हें अंग्रेजी भाषा में प्रेरणा प्रदान की।

गुड़ियात्तम के विधायक श्री कात्तवरायण ने पूज्यप्रवर के स्वागत में कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी एक महान लक्ष्य लेकर हमारे राज्य में पधारे हैं। लम्बी पदयात्रा कर आज आपका हमारे शहर में पधारना हुआ है। हम सभी अत्यंत सौभाग्यशाली हैं, जो ऐसे महापुरुष के चरण यहां पड़े हैं। आचार्यजी की वाणी को हम सभी अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें तो हमारा जीवन अच्छा हो जाए।' आचार्यश्री के संदेश को मैं जन-जन तक पहुंचाने का भी प्रयत्न करूंगा।'

एडीएमके पार्टी के सेक्रेट्री श्री जे.के.एन. चलनी ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी अहिंसा यात्रा के साथ भगवान के प्रतिनिधि के रूप में आए हैं। मैं ऐसे महापुरुष का तहेदिल से हार्दिक स्वागत व अभिनन्दन करता हूं।'

पूज्यप्रवर की तमिलनाडु यात्रा की सम्पन्नता के संदर्भ में कार्यक्रम में तमिलनाडु स्तरीय मंगल भावना समारोह का उपक्रम भी रहा। श्री अशोक लुणावत, व्यवस्था समिति-ईरोड के महामंत्री श्री रमेश पटावरी, तेरापंथी सभा-चेन्नई के अध्यक्ष श्री विमल चिप्पड़, आचार्यप्रवर की चेन्नई की बाद की यात्रा में मार्ग सेवा में काफी समय नियोजित करने वाले तेरापंथी महासभा के न्यासी श्री ज्ञानचंद आंचलिया, तेरापंथी सभा-वेलूर के अध्यक्ष श्री मीठालाल सुराणा, तेरापंथी सभा-गुड़ियात्तम के अध्यक्ष श्री महावीर गिड़िया और चतुर्मास व्यवस्था समिति-चेन्नई के अध्यक्ष श्री धर्मचंद लुंकड़ ने पूज्यचरणों में अपने मंगलभाव अर्पित किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

महातपस्वी के दर्शन हेतु उमड़े दर्शनार्थी

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने सायंकाल करीब ४.४४ बजे गुड़ियात्तम के सरस्वती विद्यालय से गुड़ियात्तम में ही स्थित तेरापंथ भवन की ओर प्रस्थान किया। विहार से करीब बीस मिनट पूर्व आसमान बादलों से आच्छादित बन गया। वातावरण में गर्मी का स्थान सहज शीतलता ने ले लिया। इस कारण मौसम ने सुहावना रूप धारण कर लिया। हवा के वेग के कारण वृक्षों से बरसते पत्तों और फूलों को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मानों प्रकृति महातपस्वी आचार्यप्रवर का अभिनन्दन कर रही है।

विहार मार्ग में स्थान-स्थान पर दर्शनार्थ खड़े अन्य जैन समाज और जैनेतर समाज के लोगों के निकट आचार्यप्रवर अपने चरण थामकर उन्हें मंगल आशीष प्रदान कर रहे थे। भावाभिभूत सैंकड़ों-सैंकड़ों

दर्शनार्थियों पर आशीषवृष्टि करते हुए आचार्यप्रवर जन-जन के आकर्षण के केन्द्र बने हुए थे। गंगै अम्मन मंदिर के पुजारियों आदि ने वेदमंत्रों से पूज्यप्रवर को वर्धापित किया। मंदिर की ओर से विशाल छत्र, कलश, नारियल, फूल आदि भी आचार्यप्रवर के अभिनन्दन में प्रस्तुत थे, किन्तु पूज्यप्रवर इन सभी भौतिक वस्तुओं से सर्वथा अलिप्त थे। आचार्यप्रवर ने मात्र मंदिर प्रबन्धन की भावनाओं को स्वीकार किया। नगरपालिका भवन के बाहर उससे संबंधित लोगों ने पूज्यप्रवर को वंदन किया। आसमान से हो रही हल्की बूंदाबांदी के कारण पूज्यप्रवर अब दर्शनार्थियों के निकट न तो अपने चरण रोक पा रहे थे और न ही उन्हें करकमल से आशीर्वाद प्रदान कर पा रहे थे, लेकिन संभवतः आचार्यप्रवर का भावनात्मक आशीर्वाद उन्हें प्राप्त हो रहा था। आचार्यप्रवर लगभग ५.० कि.मी. का विहार कर गुड़ियात्तम के तेरापंथ भवन में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

तेरापंथ भवन में पूज्यप्रवर के पदार्पण से स्थानीय तेरापंथी श्रद्धालुओं का हर्षोल्लास और भी वृद्धिंगत हो गया। इसके साथ तांता लग गया जैनेतर दर्शनार्थियों का। सैंकड़ों जैनेतर लोग सपरिवार आचार्यप्रवर के दर्शन हेतु सश्रद्धा तेरापंथ भवन में पहुंच रहे थे और पूज्यप्रवर को सादर वंदन कर पावन आशीष ग्रहण कर रहे थे। निर्धारित समय पर चरणस्पर्श का क्रम प्रारम्भ हुआ तो उससे तेरापंथी लोगों के साथ अन्य जैन एवं जैनेतर दर्शनार्थी भी बड़ी संख्या में लाभान्वित हुए। दर्शनार्थियों के आने का तांता प्रायः पूज्यप्रवर के रात्रि शयन प्रारम्भ होने तक चलता रहा।

आचार्यप्रवर रात्रिकालीन कार्यक्रम में भी पधारे और उपस्थित श्रद्धालुओं को मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए 'हमारे भाग्य बड़े बलवान' गीत का आंशिक संगान किया। लोगों ने पूज्यप्रवर का स्वागत करते हुए अवगति प्रस्तुति के क्रम में पूज्यप्रवर को निवेदन किया कि गुड़ियात्तम में २८ तेरापंथी परिवार निवासित हैं।

संयोग या चमत्कार

१ जून। परम पावन आचार्यप्रवर प्रातः गुड़ियात्तम से टी.टी. मोट्टुर की ओर प्रस्थित हुए। पूज्यप्रवर के विहार पथ के दोनों ओर गुड़ियात्तम का बाजार था और बाजार की दुकानों आदि के साथ ही जुड़े हुए थे उन दुकानों से संबंधित लोगों के घर। उनमें से कई घर आदि तेरापंथी और अन्य जैन श्रद्धालुओं के ही थे। इस कारण बाजार में यत्र-तत्र जनसमूह दिखाई दे रहा था। अपने घर के समीप से आचार्यप्रवर का पदार्पण श्रद्धालुओं को रोमांचित बनाए हुए था। पूज्यप्रवर के निकट पधारते ही लोग अपने-अपने घरों/व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में पधारने की प्रार्थना कर रहे थे। आचार्यप्रवर मंद मुस्कान के साथ सबकी भावनाओं को सुनकर उन्हें मंगलपाठ सुनाते हुए मंगल आशीष प्रदान कर रहे थे। अपने घर आदि के समीप श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण तथा पावन आशीष प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त कर श्रद्धालुजन आह्लादित थे। इस प्रकार गुड़ियात्तम के बाहर की ओर पहुंचने अर्थात् करीब एक कि.मी. दूरी तय करने में पूज्यप्रवर को लगभग पैंतीस मिनिट लग गए। तब तक पीठ की ओर स्थित सूर्य ने ऊर्ध्वारोहण कर लिया। वह अपनी तेजस्विता से पूज्यप्रवर के तन को पसीने से नहलाने लगा, लेकिन आचार्यप्रवर का समताभाव उससे अप्रभावित ही रहा।

गुड़ियात्तम की सीमा के बाहर स्थित तालाब के निकट लोगों ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया--'गुरुदेव! वर्षा की कमी के कारण यह तालाब कई वर्षों से सूखा है, इस कारण गुड़ियात्तम में पानी की किल्लत रहती है। आप हमें मंगलपाठ सुनाएं।' आचार्यप्रवर ने उपस्थित लोगों को मंगलपाठ सुनाया। प्राप्त जानकारी के

अनुसार आज और अग्रिम दो-तीन दिनों में गुड़ियात्तम में अच्छी बारिश हुई और वह तालाब पानी से भरने लग गया। भले यह संयोग ही हो, किन्तु लोगों का यही मानना था कि यह पूज्यप्रवर के मंगलपाठ का ही चमत्कार है। गुड़ियात्तम के ही एक उपनगर गणपतिनगर के निवासी विहार के दौरान पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए।

मार्ग में यत्र-तत्र मूंगफली के छिलकों के ढेर लगे हुए थे। कहीं-कहीं महिलाएं मूंगफली के दानों को छिलकों से अलग करती हुई भी दिखाई दे रही थीं। यह सब देखकर यह अनायास अनुमानित हो रहा था कि आसपास में मूंगफली की खेती अच्छी मात्रा में होती है। गोलापल्ली गांव में निर्मित 'विहार भवन' के निकट उससे संबंधित जैन लोगों ने पूज्यप्रवर को वंदन कर मंगलपाठ का श्रवण किया। पूज्यप्रवर करीब ६.० कि.मी. का विहार कर टी.टी. मोट्टुर में पधारे। यहां स्थित आदि द्रविड़ हाईस्कूल में आज का प्रवास हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में प्राणियों के पास इन्द्रियां होती हैं। संसार का ऐसा कोई भी प्राणी नहीं होता, जिसके पास किसी भी रूप में कोई इन्द्रिय न हो। इन्द्रियां पांच हैं--श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, रस और स्पर्श। जिसके पास पांचों इन्द्रियां और मन होता है, वह एक प्रकार से विकसित प्राणी होता है। इन्द्रियां ज्ञान की माध्यम हैं तो भोग का साधन भी इन्द्रियां बन सकती हैं। आदमी को इन्द्रियों का अवांछनीय असंयम नहीं करना चाहिए। इन्द्रियों का असंयम होता है तो इन्द्रियां हानि की निमित्त भी बन सकती हैं। आदमी को अपनी इन्द्रियों का संयम करने का प्रयास करना चाहिए। इन्द्रिय संयम होता है तो आदमी कार्य भी अच्छा कर सकता है और इन्द्रिय संयम अपने आप में श्रेयस्कर भी होता है।'

सायंकाल मौसम बदला। अपने आतप से झुलसा रहे सूरज को सघन बादलों ने अपनी ओट में छुपा लिया। मेघ गर्जना होने के साथ-साथ बिजलियां भी कड़कने लगीं। थोड़ी ही देर में वर्षा शुरू हो गई, जो कुछ देर तक जारी रही। वर्षा से वातावरण की उष्णता का स्थान सहज शीतलता ने ले लिया।

कर्णाटक सरकार द्वारा आचार्यप्रवर को 'राज्य अतिथि' का सम्मान समर्पित

३० मई को कर्णाटक सरकार ने अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यप्रवर को 'राज्य अतिथि' का सम्मान अर्पित करते हुए संबंधित विभागों को आवश्यक निर्देश जारी किए हैं। आचार्यप्रवर को राजकीय सम्मान अर्पित करने वाला कर्णाटक भारत का सोलहवां राज्य है।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

•

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला